कृषि पर्यटनः खेत-खलिहान में नए अवसर

डॉ. तनु सेठी

भारत एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है और 2025 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। कृषि पर्यटन 15 विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों, विविध फसल पैटर्न और संस्कृति के साथ 'विकसित भारत 2047' तक बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कृषि पर्यटन क्षेत्र सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय विकास के साथ-साथ टिकाऊ और उन्नत कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दे सकता है। नियमों में सुधार, किसानों की क्षमता निर्माण, कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बुनियादी ढांचे के विकास से कृषि पर्यटन को टिकाऊ और लाभकारी बनाया जा सकता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ लगभग 46.1% कार्यबल कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों में कार्यरत है जो वित्त वर्ष 2023–24 में देश की कुल जीडीपी का लगभग 17.8% योगदान देता है। देश के समावेशी आर्थिक विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कृषि क्षेत्र का योगदान बढ़ना अति आवश्यक है। इस दिशा में 'कृषि पर्यटन' टिकाऊ खेती के लिए एक वरदान साबित हो सकता है। भारत समावेशी आर्थिक विकास की गति को बढ़ाते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2047 तक 'आत्मनिर्भर भारत' के आह्वान की ओर अग्रसर है।

कृषि पर्यटन को पर्यटन के ही एक हिस्से के रूप में परिभाषित किया जाता है जहाँ पर्यटक कृषि से संबंधित गतिविधियों को करने या कृषि परिवेश का आनंद लेने के लिए अपनी यात्राओं की योजना बनाते हैं। हालांकि, कृषि पर्यटन की परिभाषा विभिन्न देशों में उसकी नीतियों और ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र के कारण भिन्न होती है। 'कृषि पर्यटन' टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देकर पर्यटकों और कृषि उत्पादकों के बीच संबंध को सक्षम बनाता है और स्वदेशी खेती एवं सांस्कृतिक प्रथाओं, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देकर किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करता है।

कृषि पर्यटन देश में स्थायी और समावेशी व्यावसायिक अवसर प्रदान करता है। IMARC समूह के अध्ययन (2024) के अनुसार, भारत का कृषि पर्यटन बाजार बर्ष 2024 में 1177.9 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया और बर्ष 2033 तक 4911.9 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है, जो बर्ष 2025-2033 के दौरान 17.9% की वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) दर्शाता है। भारत के 15 विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण यहां कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने की अपार संभावनाएं हैं।

लेखिका UNIDO-India FARM प्रोजेक्ट की प्रोजेक्ट मैनेजर हैं। ईमेलः projectmgr-farm@hil.gov.in

महाराष्ट्र, केरल, पंजाब आदि राज्य पहले से ही कृषि पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं। इसलिए कृषि पर्यटन पर व्यापक योजनाओं/कार्यक्रमों को औपचारिक रूप देने से भारत की राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (UN-SDG) विशेष तौर से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, भुखमरी उन्मूलन, उचित मज़दूरी और आर्थिक विकास को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

कृषि विकासः कृषि-जलवायु और पर्यटन क्षेत्र

भारत में कृषि क्षेत्र ने वित्त वर्ष 2017 से वित्त वर्ष 2023 तक औसतन 5 प्रतिशत निरंतर वार्षिक वृद्धि दर के साथ उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया है। इसका श्रेय विभिन्न सरकारी पहलों को जाता है जिनमें उत्पादकता में वृद्धि, फसल विविधीकरण और किसानों की आय में वृद्धि की परिकल्पना की गई है। वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में कृषि क्षेत्र ने 3.5 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज की।

विश्व भर में, भारत दूध, दालों और मसालों का पहला और फलों, सब्जियों, चाय, मछली पालन, गन्ना, गेहूँ, चावल, कपास और चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत का खाद्यान्न उत्पादन 2014-15 में 265.05 मिलियन टन से बढ़कर 2024-25 में अनुमानित 347.44 मिलियन टन हो गया है जो कृषि उत्पादन में एक मज़बूत वृद्धि को दर्शाता है। देश के लगभग 80% किसान लघु और सीमांत श्रेणी में आते हैं। किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने उत्पादन-केंद्रित दृष्टिकोण से आय-केंद्रित रणनीति पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें नवीनतम और टिकाऊ कृषि तकनीकों के उपयोग के लिए किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाने पर ज़ोर दिया गया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार "किसानों को भारत के विकास के प्रमुख हितधारक और चालक के रूप में मान्यता देती है। जैसे-जैसे भारत 'अमृतकाल' में प्रवेश कर रहा है, इसके सशक्त किसान देश को खाद्य सुरक्षा से वैश्विक खाद्य नेतृत्व की ओर ले जाने के लिए तैयार हैं।" ग्रामीण विकास और ग्रामीण भारत के लोगों के लिए सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

कृषि पर्यटन किसानों को सशक्त बनाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और देश में टिकाऊ और उन्नत कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों, फसलों की विविधता, लोगों, संस्कृतियों, रेगिस्तानों, तटीय प्रणालियों, द्वीपों आदि के कारण भारत में कृषि पर्यटन-आधारित व्यवसाय मॉडल को बढ़ावा देने के अपार अवसर हैं।

पर्यटन और कृषि के बीच तालमेल

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटन एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिघटना है जिसमें लोग व्यक्तिगत या व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए अपने सामान्य परिवेश से बाहर के स्थानों की यात्रा करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, पर्यटन ने निरंतर वृद्धि और विविधीकरण का अनुभव किया है जिससे यह दुनिया भर के देशों में सामाजिक-आर्थिक प्रगति का एक प्रमुख चालक बन गया है। भारत के कई राज्य कृषि पर्यटन का अभ्यास कर रहे हैं जिनमें महाराष्ट्र, केरल, गुजरात, कर्नाटक, पंजाब, हरियाणा और नगालैंड शामिल हैं।

महाराष्ट्र ने 2005 में कृषि पर्यटन विकास निगम (एटीडीसी) की स्थापना करके कृषि पर्यटन को औपचारिक रूप दिया। यह पहल 200 से अधिक गाँवों को कवर करती है। अब तक 1,000 से अधिक कृषि पर्यटन केंद्र (ATCs) पंजीकृत हो चुके हैं जिनमें 80 लाख से अधिक पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर चुके हैं। महाराष्ट्र सरकार ने अपनी पर्यटन नीति के तहत 500 खेतों को कृषि पर्यटन केंद्र के रूप में मान्यता दी है। इससे कृषि पर्यटन और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

इसी प्रकार, केरल में स्थापित कृषि पर्यटन बहु-राज्य सहकारी समिति लिमिटेड (ATCOS) कृषि और पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के केंद्रीय रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत है। यह समिति कृषि पर्यटन विशेष रूप से मसालों के खेतों, *होमस्टे, जैविक खेती, रिसॉर्ट्स,* योग और प्राकृतिक चिकित्सा, *बैक वाटर टूरिज़्म* आदि पर ध्यान केंद्रित करता है।

इसके अलावा, जैविक खेती भारत में पारंपरिक कृषि प्रणाली है और शोधकर्ताओं, किसानों आदि सहित विभिन्न प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करती है। सिक्किम, दुनिया का पहला जैविक राज्य होने के नाते, कई कृषि पर्यटन स्थलों के साथ राज्य में अपार मूल्य जोड़ता है। कृषि पर्यटन के माध्यम से सिक्किम में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। कर्नाटक के अनूठे उच्चभूमि बागान और प्राकृतिक

ग्रामीण परिवेश भी पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। इस योजना का उद्देश्य घरेलू और विदेशी पर्यटकों को गाँवों के माध्यम से एक सांस्कृतिक अनुभव देने के साथ-साथ कृषक समुदाय के लिए आय के अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध कराना है। आगंतुक क्षेत्र की कृषि जड़ों से जुड़कर किसानों की कड़ी मेहनत की सराहना कर सकते हैं और संस्कृति एवं परंपराओं की गहरी समझ हासिल कर सकते हैं।

इस प्रकार, प्रकृति और आतिथ्य के साथ एकीकृत कृषि-आधारित अनुभव स्थायी पर्यटन प्रथाओं का समर्थन करते हैं और महिला किसानों व स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका के अवसर प्रदान करते हैं।

किसानों और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा

ग्रामीण परिदृश्य में कृषि पर्यटन सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय विकास का एक प्रगतिशील मॉडल है। किसानों के लिए कृषि पर्यटन कृषि कार्यों का विस्तार करने, कृषि भूमि की गुणवत्ता में वृद्धि करने, छोटे खेतों के लिए दीर्घकालिक स्थिरता बढ़ाने, कृषि-आधारित उत्पादों का नए और अभिनव तरीकों से प्रचार और विपणन करने तथा नए उपभोक्ता बाज़ार विकसित करने का एक संभावित तरीका है। यह ग्रामीण समुदाय की भागीदारी को और बेहतर बनाता है जिससे स्थानीय व्यवसायों, बुनियादी ढाँचे के विकास और सेवाओं के लिए अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न हो सकता है। यह स्थानीय परंपराओं, कला और शिल्प वस्तुओं के विपणन के साथ-साथ रोज़गार और आय सृजन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करेगा।

*Facility for Adoption, Readiness & Mitigation

विभिन्न देशों में ग्रामीण विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO) और संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) की तकनीकी सहायता से कृषि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है जो संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (UN-SDGs) के अनुरूप है। कृषि पर्यटन को विस्तार देने के लिए वित्तीय सहायता, आधारभूत संरचना विकास, जागरूकता और टिकाऊ खेती से संबंधित कौशल प्रशिक्षण जैसी व्यवस्थाओं की आवश्यकता है जिससे ग्रामीण संसाधनों जैसे स्थानीय समुदायों और किसानों को सक्रिय रूप से जोड़ा जा सके। टिकाऊ कृषि प्रबंधन से संबंधित कई पद्धतियां कृषि अनुसंधान संस्थानों और सरकारी निकायों द्वारा विकसित की गई हैं। इसके अलावा, GEF-UNIDO पहल के तत्वावधान में UNIDO-India FARM* परियोजना 24 जुलाई, 2024 को भारत में शुरू की गई जिसका उद्देश्य पर्यावरण-अनुकूल फसल सुरक्षा समाधान को बढ़ावा देना है। जागरूकता और प्रशिक्षण से किसानों में कृषि आदानों के चयन और टिकाऊ कृषि प्रबंधन को अपनाने में सकारात्मक बदलाव आएगा।

आगे की राह

कृषि पर्यटन एक विशिष्ट क्षेत्र है और विभिन्न देशों में इसकी परिभाषा अलग-अलग है। भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है जहाँ वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद 6.5% की दर से बढ़ रहा है और सांकेतिक सकल घरेलू उत्पाद 106.57 लाख करोड़ (2014-15) से तिगुना बढ़कर 331.03 लाख करोड़ (2024-25) हो गया है। इस क्षेत्र के औपचारिकीकरण से देश के आर्थिक और कृषि विकास में योगदान मिलेगा।

भारत में लगभग 6.65 लाख गाँव हैं जिनकी संस्कृति और फसल पद्धति अद्वितीय है। कृषि और पर्यटन से होने वाले लाभ को अधिकतम करने के लिए स्थायी ग्रामीण परिदृश्य की पहचान करना आवश्यक है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट करना उचित है कि कृषि पर्यटन केवल विदेशियों द्वारा जैविक खेतों का दौरा करने से कहीं अधिक व्यापक है। इसमें नीति निर्माताओं, नियामकों, शिक्षाविदों, किसानों और अन्य हितधारकों का आनाक, जानाक और घरेलू आवागमन शामिल है और इसमें संस्थागत प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और कृषि कार्यक्रमों का तेज़ी से बढ़ता हुआ वर्ग भी शामिल है। कृषि पर्यटन को टिकाऊ और लाभकारी बनाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से किसानों की क्षमता निर्माण, कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है। ❑